



सितार वादन की परम्परागत शैली के विकास में सेनिया घराने का योगदान : एक ऐतिहासिक अवलोकन

शोधार्थी (संगीत विभाग)
दीपा खिलवानी

शोध केन्द्र
दयानन्द गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, कानपुर

शोध पर्यवेक्षक
प्रो० (डॉ) रुचिमिता पांडे
दयानन्द गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, कानपुर

सारांश

सितार उत्तर भारत में प्रचलित एक लोकप्रिय प्रमुख तन्त्री वाद्य है, जिसका निर्माण डांड, तूम्बा खूंटी आदि के द्वारा किया गया है। वर्तमान समय में अनेक तरह के सितार प्रचलित हैं जिसकी रचना वादकों ने अपनी सुविधानुसार की है, किसी ने पर्दों की संख्या कम ज्यादा की है, तो किसी ने तारों की संख्या के आधार पर सितार का निर्माण किया है। 'घराना' जो हिन्दुस्तानी संगीत की एक मुख्य विशेषता मानी जाती है, जिनके द्वारा ज्ञान को संचित करके रखा जा सकता है। गायन के घरानों की तरह सितार के भी घराने हैं, जिसमें मुख्य घराना 'सेनिया घराना' माना जाता है। सेनिया घराना जिसकी उत्पत्ति 15वीं शताब्दी मानी जाती है, सितार का प्रथम घराना कहते हैं। माना जाता है कि अन्य घरानों की उत्पत्ति भी इसी सेनिया घराने से हुई है।

मुख्य शब्द

घराना, वादन शैली, मसीतखानी गत, रजाखानी गत, गायकी अंग, तन्त्रीकारी अंग।

प्रस्तावना

घराना शब्द की उत्पत्ति 'घर' शब्द से हुई है। जिस प्रकार एक ही घर या परिवार में पीढ़ी दर पीढ़ी वंश-परम्परा होती है, जिसके अपने कुछ नियम, कायदे तथा अनुशासन होते हैं, उसी प्रकार संगीत में भी घराना हिन्दुस्तानी संगीत की एक विशेष विशेषता है। संगीत में घराना शब्द से तात्पर्य उस परम्परा से है, जिसमें गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा अनेक पीढ़ियों तक संगीत की शिक्षा प्रदान की जाती है। सुशील कुमार चौबे के अनुसार "टकसाली संगीत" को घरानेदार संगीत भी कहते हैं, टकसाली संगीत का अर्थ सच्चा और प्रमाणिक संगीत है। साधारण शब्दों में घराना शब्द से तात्पर्य वर्ग, सम्प्रदाय अथवा से कुल से है। संगीत में भी घराने तथा सम्प्रदाय है, जिनके संस्थापकों ने अपनी कड़ी मेहनत व लगन से संगीत के क्षेत्र में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है। प्रत्येक घराने के संस्थापकों ने संगीत के क्रियात्मक रूप में कुछ नए प्रयोग किए जिसे अन्य घरानों से अलग पहचाना जा सके। प्रत्येक घराने में कुछ विशेष विशेषताएँ होती हैं जो उन्हें अन्य घरानों से अलग करती हैं। डॉ. जोगिन्द्र सिंह बावरा के अनुसार, 'जब कोई वरिष्ठ कलाकार अपनी बुद्धिमद्धता और अपनी कठिन साधना से एक नई शैली का निर्माण करता है, और जब वहीं शैली उनके शिष्यों द्वारा प्रचारित होती है तो वह एक विशेष घराने को जन्म देती है। "संगीत में घराने का एक विशेष स्थान है। गायन में घराने की तरह वादन में भी घराने होते हैं जिसे "बाज़" कहते हैं। अर्थात् प्रत्येक बाज़ की अपनी एक अलग 'स्टाईल तथा शैली' होती है जो उन्हें अन्य घरानों से अलग करती है। 'स्टाईल' तथा 'शैली' से तात्पर्य सितार की वादन पद्धति से है। सितार के घरानों में सबसे मुख्य घराना 'सेनिया घराना' माना जाता है। माना जाता है कि सेनिया घराने की छाप सितार के प्रत्येक घराने में देखने को मिलती है। सेनिया घराना सितार का प्रथम घराना माना जाता है जिसकी उत्पत्ति 15वीं शताब्दी अथवा मध्यकाल मानी जाती है।

सेनिया घराने की मुख्य शाखाएँ

सितार वादन में वादन शैली को बाज़ कहा जाता है, इसी वादन शैली में परिवर्तन करके अनेक बाज़ों का निर्माण किया गया जैसे- पूर्वी बाज़, जयपुरी बाज़, सेनिया बाज़, मसीतखानी बाज़ आदि। वर्तमान समय में इन्हीं बाज़ को घराना के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि सितार का केवल एक ही घराना था जिसे "सेनिया बाज़ या सेनिया घराना" के नाम से जाना जाता है। अन्य घरानों की उत्पत्ति इसी सेनिया घराने से मानी जाती है। सेनिया घराना मूल रूप से गायन से सम्बन्धित था, परन्तु इस घराने के गायकों ने गायन के साथ-साथ तन्त्रीकारी को भी अपनाया। तानसेन द्वारा सेनिया घराने की उत्पत्ति मानी जाती है। सेनिया का शाब्दिक अर्थ "तान + सेन" अर्थात् तानसेन के "सेन" से सेनिया शब्द की उत्पत्ति हुई है। तानसेन के वंशज ही सेनिया कहलाये। सेनिया घराने के वंशजों ने ही अपनी सेनिया परम्परा को बनाये रखा और अपने वंशजों और शिष्यों द्वारा इस शैली को आगे बढ़ाया। "सेनिया घराने की तीन शाखाएँ हैं -पहली जो तानसेन के छोटे पुत्र बिलास खाँ के नाम से जानी जाती है इस घराने के वंशज वीणा और रबाब बजाने में तो कुशल थे ही साथ ही साथ ध्रुपद भी गाते थे। इस घराने के वंशज लखनऊ और बनारस जाकर बस गए। जिसे सितार का पूर्वी बाज़ कहा जाता है। दूसरी शाखा- सूरतसेन से निर्मित हुई। इस घराने के वंशज जयपुर जाके बस गये, जिसे सितार का पश्चिमी बाज़ कहा जाता है। इस घराने के वंशज सितार और वीणा के साथ-साथ ध्रुपद भी गाते थे।

तीसरी शाखा मिश्री सिंह के द्वारा मानी जाती है जो एक श्रेष्ठ वीणा वादक थे। प्यार खाँ, जाफर खाँ, और बासत खाँ तीनों भाई इसी घराने से सम्बन्धित हैं। इस घराने के वंशज रबाब और ध्रुपद से सम्बन्धित थे। इसके अतिरिक्त उमराव खाँ के शिष्य गुलाम मुहम्मद खाँ ने लखनऊ घराने की स्थापना की जो सितार से सम्बन्धित था वे भी इसी घराने से सम्बन्धित थे।

इस घराने के प्रमुख सितार वादक अमृतसेन, रहीमसेन तथा निहालसेन हैं इनके समय में ध्रुपद जैसी गम्भीर गायकी की लोकप्रियता कम होती जा रही थी और ख्याल तथा अन्य चंचल प्रकृति युक्त गायिकी प्रचार में आ रही थी। कुछ अन्य मतों के अनुसार कहा जाता है कि सितार के मुख्य रूप से दो ही बाज़ थे, सेनिया अथवा पूर्वी बाज़। तानसेन की मृत्यु के बाद सेनिया घराने के वंशज मुख्य रूप से दो भागों में बंट गये थे जो बीनकार और रबाबिए कहलाये और इन्हीं से अन्य घरानों की उत्पत्ति हुई। तानसेन जो स्वयं एक महान कलाकार थे, उनकी शिष्य तथा वंश-परम्परा इतनी अधिक समृद्ध और प्रभावशाली है कि अन्य घरानों के गायकों और वादकों का सम्बन्ध स्वयं ही इस घरानों से जुड़ जाता है। तानसेन के घराने को "हुसैनी घराना" के नाम से भी जाना जाता है जिसे बाद में "सेनिया" कहा जाने लगा।

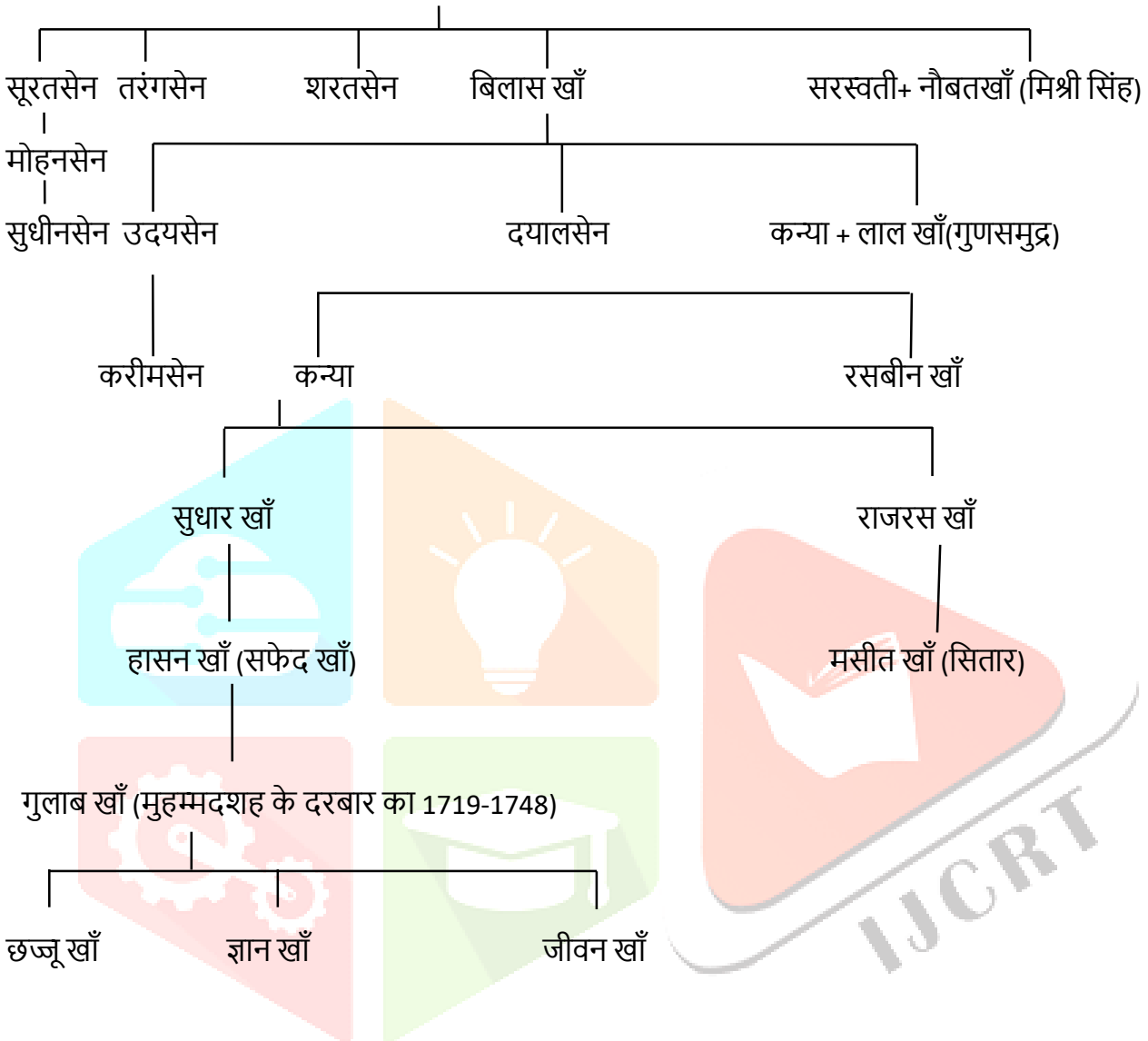
सेनिया घराने की शिष्य परम्परा

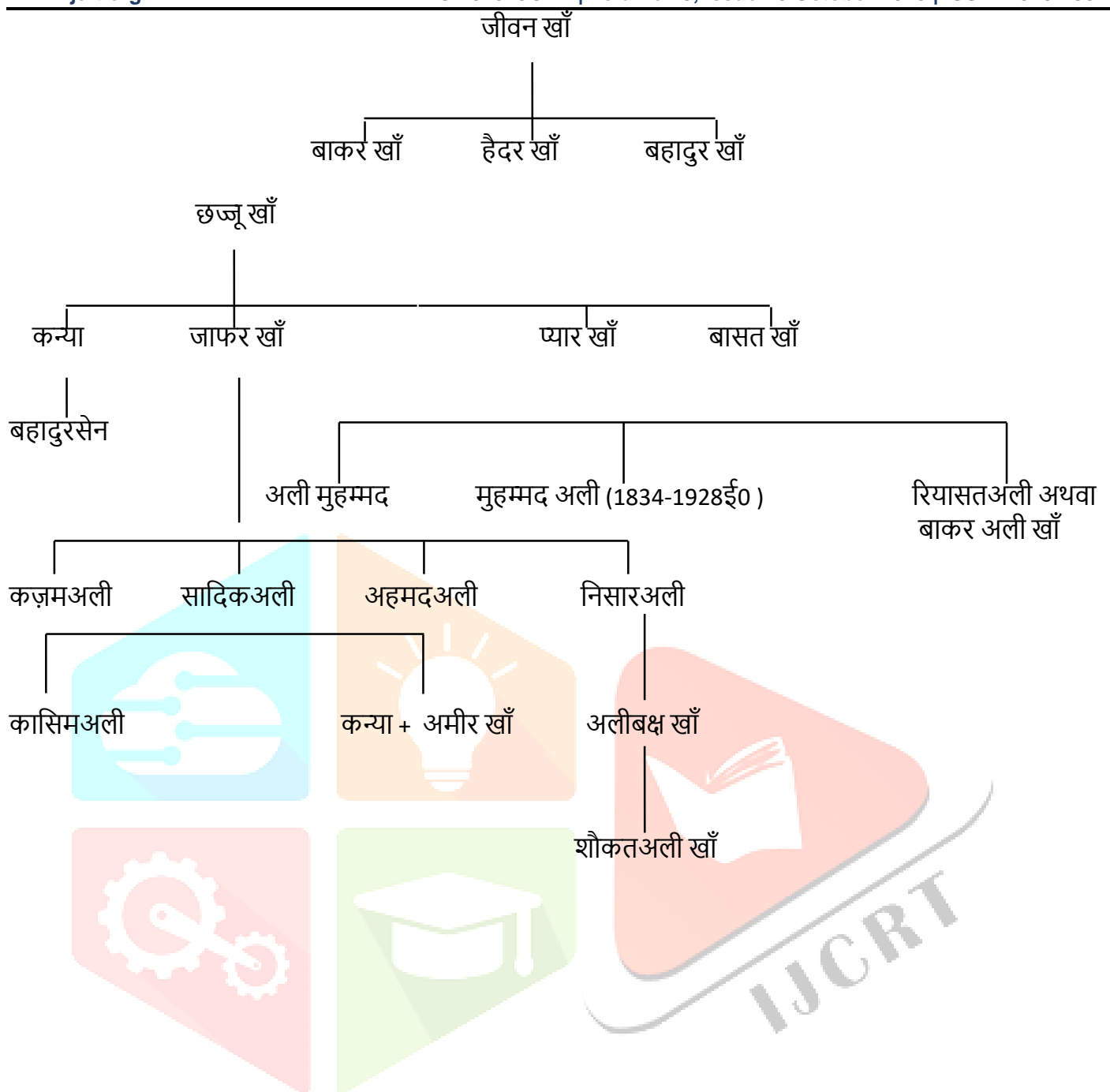
तानसेन की वंश परम्परा में तानतरंग, सुरतसेन, विलास खाँ, सहेलसेन, सुधीनसेन आदि माने जाते हैं। भगवतशरण शर्मा के अनुसार- "तानसेन का घराना वीणा प्रधान बाज़ था, इसी घराने के रहीमसेन और उनके पुत्र अमृतसेन ने सितार बजाना शुरू किया। वीणा प्रधान बाज़ होने के कारण यह एक कठिन बाज़ था, जो आगे चलकर सेनिया घराना के नाम से जाना गया, तथा निहालसेन और मुहम्मद खाँ भी इसी घराने से सम्बन्धित थे।

तानसेन वंशावली-पुत्र वंशज

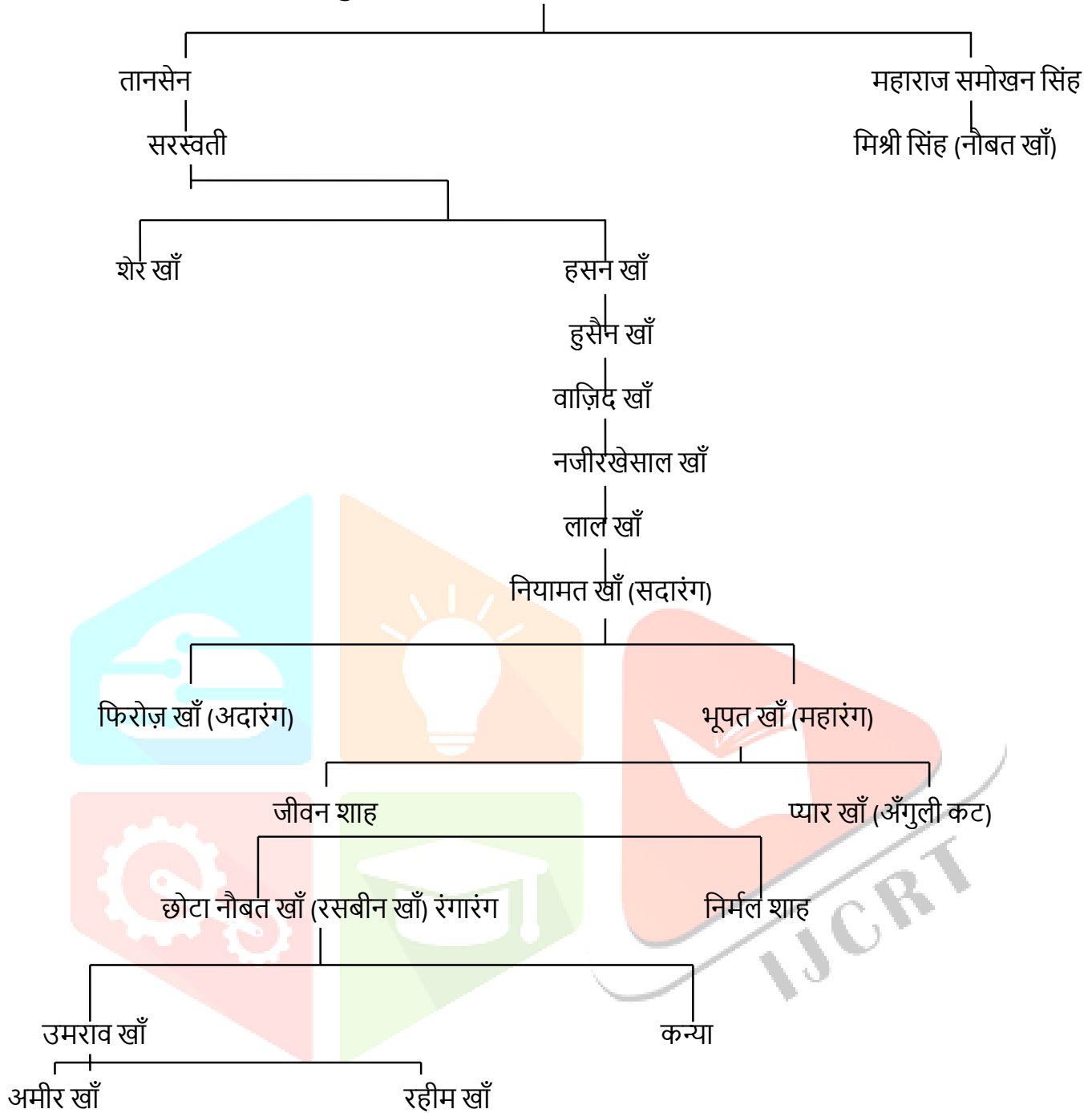
मकरन्द या मुकुन्द पाण्डे

हरिदास के शिष्य-रामतनु पाण्डे या मोहम्मद अत्ता खाँ या तानसेन (1505-1585), प्रेम कुमारी या हुसैनी ब्राह्मणी 1480-1575





तानसेन (सेनिया घराने) की पुत्री वंशावली



(तानसेन के वंशज कासिम अली की बहन)



सेनिया घराने की वादन शैली

कुछ मतों के अनुसार, सेनिया घराने की सबसे बड़ी देन तन्त्रकारी है। सेनिया घराना गायन से सम्बन्धित होने के बावजूद इस घराने के वंशजों ने तन्त्रीकारी पर विशेष ध्यान दिया। तानसेन की पुत्री वंशज जो बीनकार थे और पुत्र वंशज रबाबिए हुए, परन्तु इन सब की मुख्य गायन शैली ध्रुपद थी। इन मतों से यह सिद्ध होता है कि तानसेन ही सेनिया घराने के मूल पुरुष थे और तानसेन के वंशज ही सेनिया कहलाए। सेनिया घराना मुख्य रूप से वीणा प्रधान होने के साथ-साथ सीधा सरल तथा तीन ताल में बृद्ध रहता था। सरल राग, अन्त में जोड़ का काम, छोटी तथा सीधी मींड लेना, मींड तथा गमक की अपेक्षा बोल-बॉट पर अधिक ध्यान, द्रुत लय का प्रयोग न करना यह सेनिया घराने की विशिष्ट विशेषताएँ मानी जाती है। सेनिया घराने के वादन में बारह प्रकार की वादन क्रियाएँ जैसे - आलाप, जोड़-आलाप, लड़-गुथाव, लड़ी, झाला, ठोंक झाला, गत तोड़ा, गुथाव लड़-लपेट, कत्तर और तार परन आदि को समाहित किया। कालान्तर में इन्हीं बारह क्रियाओं का प्रयोग सितार पर किया जाने लगा। वर्तमान समय में यह सितार की प्रमुख क्रियाएँ मानी जाती है। सेनिया घराने में प्रयुक्त की जाने वाली बारह क्रियाओं का विस्तृत वर्णन कुछ इस प्रकार है-

आलाप

दा बोल का प्रयोग करके विलम्बित लय में स्वरों का विस्तार करने की क्रिया को आलाप कहा जाता है।

जोड़

इस क्रिया में आलाप की दोगुनी लय का प्रयोग किया जाता है। “दा, द- र, और रदा” बोलों की अधिकता रहती है।

गत

इस क्रिया में ताल का प्रयोग किया जाता है। गतों में तीनों लय के प्रयोग के साथ-साथ विभिन्न तरह के बोलों जैसे- “दादिर दारा, दा-र, दा-रदा और दा दिर दिर दिर” आदि बोलों का प्रयोग किया जाता है।

तोड़ा

गत बजाने के बाद तोड़ा बजाया जाता है, किसी भी मात्रा से प्रारम्भ होकर सम पर समाप्त किया जाता है। तोड़े की लय गत से तेज होती है, इसमें विभिन्न प्रकार के बोल जैसे-दा-रदा, दार दा, दिर, दार दार दा“ आदि बोलों का प्रयोग किया जाता है। तोड़ों की रचना वादक की कुशलता पर निर्भर करता है, वादक अपनी क्षमतानुसार विभिन्न तोड़ों का निर्माण करता है।

लड़ी

इस क्रिया में स्वरों का प्रयोग कम और बोलों का प्रयोग अधिक किया जाता है, बोलों का प्रयोग एक छन्द के रूप में होता है।

गुथाव

इस क्रिया में बाएँ और दाएँ दोनों हाथ की अंगुलियों का प्रयोग किया जाता है, “दारदा” बोल की अधिकता रहती है और बोलों को तीन या चार स्वरों में बाँटकर प्रयोग किया जाता है।

लड़-गुथाव

इस क्रिया में ‘दा-रा’ और ‘दिर’ बोलों का प्रयोग किया जाता है, इसमें बोलों को पाँच व छह स्वरों में बाँटकर प्रयोग किया जाता है।

लड़-लपेट

इसमें ‘दारा’ और ‘दिर दारा’ बोलों की प्रमुखता रहती है।

कतर

इसमें ‘रा’ बोल का प्रयोग किया जाता है। माना जाता है कि इस क्रिया की उत्पत्ति रबाब वादकों द्वारा की गयी है, इस क्रिया को सरोद वादक या उस घराने के सितार वादकों द्वारा इस क्रिया का प्रयोग किया जाता था।

तार-परन

यह क्रिया परखावज के बोलों से सम्बन्धित है, इस क्रिया में पखावज के विभिन्न बोलों का प्रयोग किया जाता है।

झाला

सितार वादन के अंत में बजाये जाने वाले भाग को झाला कहते हैं, इसमें लय का विशेष स्थान है। द्रुत से अतिद्रुत लय का प्रयोग किया जाता है, इस क्रिया में बाज़ के तार पर ‘दा तथा चिकारी के तार पर ‘रा’ बोल बजाकर अर्थात् दारारा झाले में इसी बोलों का प्रयोग किया जाता है। द्रुत गत के बाद झाला वादन प्रारम्भ होता है।

ठोंक झाला

ठोंक झाले में बाज़ के तार पर 'रा' बोल प्रयुक्त किया जाता है और चिकारी के तार पर की जाने वाली क्रिया साधारण झाले के समान ही रहती है। इस क्रिया में "दारदा, दिर दा और दिर दिर" बोलों की प्रधानता रहती है। इस क्रिया में मींड का प्रयोग किया जाता है।

सेनिया घराने के वादकों ने अपनी बुद्धि और क्षमतानुसार इन बारह क्रियाओं का प्रयोग किया और अपनी वादन शैली को एक नया रूप दिया। सितार को लोकप्रिय वाद्य बनाने में सेनिया घराने के वादकों का विशेष योगदान रहा। सेनिया घराने के वंशजों ने बीन और ध्रुपद की क्रियाओं का प्रयोग सितार वादन की शैली को और भी रोचक बनाने का प्रयास किया। बीनकारों ने लय को प्रधानता दी और बीन की सभी क्रियाओं का प्रयोग सितार पर किया, रबाब वादकों ने लय को प्रधानता दी, परन्तु उन्होंने किसी भी क्रिया प्रयोग सितार पर नहीं किया, जिसके पश्चात् सितार पर बीन अंग की वादन शैली प्रचलित रही। ध्रुपद की चार बानियाँ गोबरहार, डागुर, खण्डहार, और नौहार है, माना जाता है कि सितार और गत का विस्तार इन्हीं चार बानियों के आधार पर किया जाता है। सितार का जोड़ भाग खण्डहार बानी का अनुकरण करता है। सितार वादक जोड़ अंग छन्दबद्ध रूप में करते थे और तारपरन और लड़ी अंग द्वारा स्वरों का विस्तार किया करते थे और इसी अंग में कई पखावज वादक संगति भी प्रारम्भ कर दिया करते थे। सितार वादन की इस शैली के आधार पर सितार वादकों ने आलाप और जोड़ आलाप के बाद गत बजाना प्रारम्भ कर दिया जिसकी रचना ध्रुपद के आधार पर की जाती थी। सितार पर बजाने योग्य गतों का निर्माण करने वाले प्रथम रचनाकार नियामत खाँ (सदारंग) को माना गया है। सदारंग ने ही गतों का सर्वप्रथम निर्माण किया था, उसके पश्चात् सदारंग के छोटे भाई खुसरो खाँ के सुपुत्र फिरोज खाँ ने फिरोजखानी गतों की रचना की उन्होंने सितार पर बजाई जाने वाली गतों के साथ-साथ ख्याल की बन्दिशों की भी रचना की। फिरोज खाँ के बाद उसके पुत्र मसीत खाँ ने गतों का निर्माण किया, जो मसीतखानी गत के नाम से जानी जाती है, मसीत खाँ जो स्वयं वीणा वादक के साथ-साथ ध्रुपद गायक भी थे। मसीतखानी गत सरल थी, उसके बोल भी निश्चित थे। मसीतखानी सदैव तीन ताल में ही बजाई जाती थी तथा बारहवीं मात्रा से यह गत प्रारम्भ होती थी। मसीत खाँ ने अपनी बुद्धि कौशल से इन गतों का निर्माण किया था, तथा मसीतखानी गत की स्थाई अधिकतर एक ही आवर्तन की होती थी। मसीतखानी गत के बोल कुछ इस प्रकार है-

दिर दा दिर दारा दादारा, दिर दा दिर दा रा दादारा

वर्तमान समय में मसीतखानी गत को 'विलम्बित गत' के नाम से जाना जाता है और यह अत्यधिक लोकप्रिय भी है। मसीत खाँ के पश्चात् सुखसेन के पुत्र उस्ताद दूल्हे खाँ (जयपुर) के दामाद एवं शिष्य रहीमसेन ने अपने बाज़ में वीणा और ध्रुपद के सौन्दर्य तत्वों को समावेश करके सितार को सम्पूर्ण वाद्य के रूप में उसे प्रतिष्ठित किया। रहीमसेन के समय में ध्रुपद शैली ही प्रचार में थी। इस बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने आलाप ध्रुपद अंग से और गत में बोल बांट का प्रयोग रबाब और बीन की वादन शैली के आधार पर किया।

इन्होंने अपनी वादन शैली में मिज़राब के बोलो का अधिक प्रयोग किया। सर्वप्रथम इन्होंने ही जोड़ आलाप बजाने और गत बजाने की पद्धति अपनाई थी। इन्होंने अपनी गत में विभिन्न लयों का प्रयोग किया और अलग-अलग बोलो का प्रयोग कर, किसी भी मात्रा से उठाकर सम पर लाना इनके गत की विशेष विशेषताएँ मानी जाती है। ध्रुपद की लय और उपज अंग का प्रभाव जो पहले वीणा पर दिखाई देता था, कालान्तर में इन सब का प्रभाव सितार पर पड़ने लगा। मसीतखानी बाज़ जो जयपुर, अलवर और झझर में प्रचलित रहा, जिसे बाद में पश्चिमी बाज़ कहा जाने लगा। वहीं दूसरी ओर लखनऊ जौनपुर और काशी में पूर्वी बाज़ प्रचलित होने लगा, इस बाज़ का अविष्कार गुलाम रज़ा खाँ ने किया जो मसीत खाँ के शिष्य थे। उन्होंने अपने बाज़ में मध्य और द्रुत लय का अधिक प्रयोग कर बोलों के काम को बढ़ा दिया, ये बाज़ ठुमरी, ख्याल और तराने पर आधारित था। इस गत को प्रारम्भ करने से पहले आलाप किया जाता था जो संक्षिप्त और विलम्बित लय में होता था। इसके बाद गत बजाते थे, जिसकी लय मध्य और द्रुत होती थी, जिसमें विभिन्न लयकारियों और छोटे-छोटे स्वर समूहों का भी प्रयोग किया जाता था। इस बाज़ में जोड़ का काम कम या तो न के बराबर होता था। इस गत में विभिन्न बोलो का प्रयोग कर विस्तार अंग की तानों का भी प्रयोग करते थे। इस गत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके बोल निश्चित नहीं थे और इसे किसी भी मात्रा से प्रारम्भ किया जा सकता है। रज़ाखानी गत के बोल कुछ इस प्रकार है-

दा दिर दिर दिर दा- रदा-र दादा-रदारादारा दारा

दा दिर दिर दिर दा- रदा- र दादा-दादारादारा

रज़ाखानी गत लखनऊ, जौनपुर, फर्रुखाबाद, काशी आदि स्थानों में प्रचलित रही जिसे पूर्वी बाज़ भी कहते हैं। रज़ाखानी गत में बोलों पर अधिक ध्यान दिया गया जैसे-दा और रा के अतिरिक्त “दिर दा, दा-रदा” तथा विभिन्न बोलो का प्रयोग किया गया जो इसे मसीतखानी बाज़ से अलग करता है। मसीत खाँ के समय में सितार का प्रयोग सीधे और सरल रूप में होता था और रहीमसेन ने अपने बाज़ में कुछ सौन्दर्य तत्वों को जोड़कर अपने बाज़ को पूर्ण विकसित किया और रज़ा खाँ ने अपने बाज़ में लयकारी और विभिन्न बोलों का प्रयोग कर अपने बाज़ को सभी बाज़ों से अलग पहचान दिलाई। रज़ाखानी गत में चंचलता होने के कारण इसे सभी रागों में नहीं बजाई जाती थी, इसके लिए चंचल प्रकृति के राग जैसे- काफी, भैरवी, तिलंग, पीलू आदि रागों का प्रयोग किया जाता था। रज़ाखानी गत की कुछ विशेष विशेषताएँ मानी जाती है जैसे- बराबर की लय में लड़ी अंग का प्रयोग, बोल प्रधान गतकारी, संयुक्त बोलो का प्रयोग और गत बजाते समय लड़न्त व तार परन का प्रयोग करना। पूर्वी बाज़ के वादक अपने सितार वादन में मसीतखानी गत का वादन नहीं किया करते थे। 18वीं शताब्दी के आस-पास दो प्रमुख बाज़ों का विकास हुआ। जिसे मसीतखानी व रज़ाखानी कहते हैं। 19वीं शताब्दी में सितार वादकों ने ख्याल अंग की गायकी का अनुसरण करके सितार में आलाप बजाना शुरू किया और इसी समय सेनिया घराने का सम्पूर्ण प्रचार पूरे उत्तर भारत में हुआ। सेनिया घराने के वादकों ने सबसे पहले आलाप उसके बाद जोड़ आलाप इसके पश्चात् गत बजाने की पद्धति अपनाई। 19वीं शताब्दी में इमदादखानी बाज़ की नींव पड़ी, जिसकी स्थापना अमृतसेन, साहबदाद खाँ इनके पौत्र इनायत खाँ और बरकत उल्ला खाँ ने की। इन्होंने अपने बाज़ में गत के भराव के लिए मिज़राफ के विभिन्न बोलों का प्रयोग कर एक नये बाज़ का प्रचार किया, जिसे ‘इटावा घराना या इमदादखानी बाज़’ के नाम से जाना जाता है। इसी शताब्दी के प्रारम्भ में सितार वादन में कुछ विशेष परिवर्तन किए गए जैसे- मसीतखानी गत का मुखड़ा पाँच

मात्रा का होता था तथा ग्याहरवीं मात्रा के पश्चात् बारहवीं मात्रा से गत शुरू की जाती थी, और मुखड़े को विभिन्न लय में बजाकर सम पर आते थे, धीरे-धीरे राग विस्तार करने की क्रिया प्रारम्भ की गयी। जिसे तोड़ा कहते हैं। तोड़ा 8 से 16 मात्रा और दो आवर्तन का भी देखने को मिलता है। इसी समय सितार पर दाहिने हाथ के काम का प्रयोग अधिक किया जाने लगा और पखावज के छन्दों को मिजराब की ठोंक से बजाया जाता था। इसी समय ख्याल गायकी की लोकप्रियता भी बढ़ती जा रही थी, जिसका प्रभाव सितार पर भी पड़ने लगा जैसे- गत को ख्याल की भौति बजाना, ख्याल अंग से स्वर विस्तार करना, गत के बीच में द्रुत लय में तबले के बोलो के आधार पर तोड़े बजाने की प्रथा। अनेक संगीतज्ञों ने अपने सितार वादन पद्धति में परिवर्तन कर विभिन्न शैलियों का निर्माण किया। गत में तिहाई लेने की परम्परा उस्ताद इनायत खाँ ने शुरू की। इनायत खाँ के समय में ही मसीतखानी गत परिवर्तन शुरू हुआ था, इसी शताब्दी के आरम्भ में सितार वादन के साथ तबले की संगत की जाने लगी। यह वही समय था जब सितार वादक दो अलग-अलग वर्गों में बटने लगे थे, जिसमें एक वर्ग मसीतखानी बाज़ बजाता था तो दूसरा रज़ाखानी बाज़। सेनिया घराने के उस्ताद अमीर खाँ और बरकतउल्ला खाँ केवल मसीतखानी बाज़ बजाते थे, वहीं पन्नालाल वाजपेयी और गुलाम रज़ा खाँ रज़ाखानी गत बजाते थे। दोनों बाजों के साथ-साथ बजाने की प्रथा उस्ताद इमदाद खाँ और उस्ताद आशिक अली खाँ ने शुरू की। इससे पहले कोई भी संगीतज्ञ दोनों गतों का वादन साथ-साथ नहीं करता था। सेनिया घराने के सितार वादकों ने सितार वादन में 22 प्रकार के छन्द युक्त आलाप का प्रयोग किया जो सेनिया घराने की एक महत्वपूर्ण विशेषता मानी जाती है। सेनिया घराने के प्रतिनिधित्व संगीतज्ञ तानसेन की वंश-परम्परा और शिष्य-परम्परा कुछ इस प्रकार मानी गई है - तानतरंग, विलास खाँ, सुरतसेन, सुहेलसेन और सुधीनसेन आदि जो तानसेन से सम्बन्धित थे। तानसेन और उसके ज्येष्ठ पुत्र तानतरंग की वंश - परम्परा सेनिया घराने के सितार वादक अमृतसेन तक कुछ इस प्रकार है- तानसेन, तानतरंग खाँ, सुफलसेन, सूरजसेन, झण्डे सेन, सुभागसेन, दयालसेन, सुरत सेन, निहालसेन, ख्यालसेन, खुशाल सेन, कृपाल सेन, अद्भुत सेन, बालसेन, रूपसेन, लालसेन, फाजिल सेन, मुराद सेन, रहीमसेन, सुखसेन और अमृत सेन आदि रामपुर के उमराव खाँ खंडारे जो सेनिया घराने से सम्बन्धित है। उनके पुत्र रहीम खाँ और अमीर खाँ, अमीर खाँ के पुत्र वजीर खाँ जो एक बीनकार थे। जफर खाँ और प्यार खाँ जो लखनऊ से सम्बन्धित थे बीनकार कहलाये। मसीत खाँ जो एक सितार वादक और मसीतखानी बाज़ के प्रवर्तक थे। उस्ताद अमीर खाँ जो ग्वालियर के राजा माधवराव सिंधिया के गुरु थे और लखनऊ के जाफर खाँ दोनों ही उत्तम सितार वादक थे तथा सेनिया घराने से सम्बन्धित थे। इन कलाकारों के अलावा जो सेनिया घराने से सम्बन्धित हैं वे बहादुर हुसैन खाँ, अली मुहम्मद खाँ, सादिक अली, नवाब कल्वे अली इनके भाई हैदर अली खाँ जो रामपुर से सम्बन्धित थे उनका नाम उल्लेखनीय है। इन कलाकारों ने गायन शैली के अतिरिक्त तन्त्र वाद्यों जैसे-रबाब, सुरसिंगार और वीणा जैसे कठिन वाद्यों में निपुणता हासिल की और सेनिया घराने को समृद्धशाली बनाने में विशेष योगदान दिया।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से यह स्पष्ट होता है कि सेनिया घराने की वंश तथा शिष्य परम्परा इतनी समृद्ध और प्रभावशाली है कि संगीत के हर एक घराने से सेनिया घराने का आभास होता है। तानसेन, जिसके द्वारा सेनिया घराने का निर्माण हुआ, इनके जैसा संगीतज्ञ शायद ही अब देखा जा सकता है। अकबर के काल से लेकर तानसेन परम्परा (सेनिया घराना) के संगीतज्ञ आज हिन्दुस्तानी संगीत के प्रसिद्ध कलाकारों के रूप में जाने जाते हैं। इन्हीं कलाकारों के द्वारा ही आज सेनिया घराने का विस्तार किया जा रहा है। सम्पूर्ण अध्ययन से एक बात स्पष्ट रूप से कहीं जा सकती है कि यदि तानसेन न होते तो सेनिया घराना भी न होता अर्थात् उनकी शिष्य परम्परा इतनी प्रभावशाली थी कि आज प्रत्येक घराने का सम्बन्ध सेनिया घराने से स्वयं ही जुड़ जाता है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि तानसेन के वंशजों और शिष्यों ने गायन और वादन दोनों शैलियों को आज जीवित और सुरक्षित रखा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ❖ जैन, वी. (2008). सेनिया घराना और सितार वादन शैली. कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- ❖ भटनागर, आर. (2006). सितार-वादन की शैलियाँ. कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- ❖ वालिया, डी. (2011). सितार के सरोकार. संजय प्रकाशन.
- ❖ राय, वी. एस. एस. (2004). जहान ए सितार, सितार वादन की विभिन्न शैलियों का उद्भव एवं विकास. कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- ❖ कुमार, ए. (2023). संगीत रत्नावली. अभिषेक पब्लिकेशन्स.
- ❖ निगम, आर. (1996). सितार की उत्पत्ति का विस्तृत विवेचन तथा सितार के बाज़ का विकास क्रम. मानक पब्लिकेशन्स.
- ❖ श्रीवास्तव, एस. (2024). भारतीय संगीत की विभिन्न शैलियाँ. त्र्यम्बक प्रकाशन.
- ❖ ठाकुर, बी. (2009). तरबदार सितार की उत्पत्ति विकास एवं महत्व. कनिष्क पब्लिशर्स. डिस्ट्रीब्यूटर्स.
- ❖ Hamilton, J.S. (1994). Sitar Music in Calcutta, An Ethnomusicological study. Motial Banarsidass Publishers.
- ❖ गर्ग, एल. (2002). संगीत विशारद. संगीत कार्यालय. हाथरस.
- ❖ पांडे, आर. (2021). सितार वाद्यों के विकास में विभिन्न कलाकारों और घरानों का योगदान, एक ऐतिहासिक अध्ययन. artistic naration Vol.12 No.2, July -Dec.2021, ISSN No.0976-744-2395-7247
- ❖ पांडे, आर. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में तत् वाद्यों की शैली में सितार वाद्य की तकनीक व आधुनिक बाज़. Adbhut bharat, Vol.1, ISBN.978-93-86213,52-5